



क्षमापना

वैर को दिल से मिटायें
मैत्री को दिल में बसायें
मिच्छामि दुक्कडम मांगें
प्रेम के दीपक जलायें
हम करते हैं सबसे
क्षमायाचना..



मिच्छामि दुक्कडम

सत्य साधना केन्द्र

एक गांव था। वह गांव समुद्र के किनारे था। संयोग ऐसा था कि उसी गांव में समुद्र के किनारे एक चट्टान थी। और उस चट्टान से रात के समय कोई न कोई जहाज, कोई न कोई नौका आ करके टकरा जाती थी। अनेक दुर्घटनाएं उस चट्टान के कारण होती रहती थीं। अनेकों लोग उस चट्टान के कारण मीत के घाट उतर रहे थे। गांव वालों ने सोचा कि कुछ करना चाहिए। हमारे गांव में ऐसी दुर्घटनाएं घट रही हैं। एक्सिडेंट हो रहे हैं। लोग मर रहे हैं। कुछ उपाय करना चाहिए। किसी ने कहा- यह काम तो सरकार का है, सैन्ट्रल गवर्नमेंट का है। दूसरे व्यक्ति कहने लगे- यह काम नगरपालिका का है। सभी जिम्मेदारी को एक दूसरे के सिर पर धोप कर, बड़ी बड़ों आदि के अपने अपने घरों को चले गये। यहां एक समझदार व्यक्ति भी था जो चुपचाप सभी बातें सुन रहा था। रात हुई, फिर एक नौका उसी चट्टान की ओर बढ़ने लगी। कई लोगों को जागे फिर ये संकट में थी। नौका चट्टान से टकराती, उससे पहले ही नाविक को उस चट्टान पर एक रोशनी टिमटिमाती नज़र आई और उसने तत्काल नौका का रुख मोड़ दिया। दरअसल उस समझदार व्यक्ति को समझ में आ गया था कि रोज जो दुर्घटनाएं होती हैं, उनके पीछे एक ही कारण है और वो है अंधेरा। इसलिए वो हर शाम एक लाइट जलाकर उस चट्टान पर रखने लगा और फिर कभी कोई नौका आकर नहीं टकराई।

व्यक्ति अंधेरे कमरे में जाता है तो वहां रखी हुई वस्तुओं से टकराता है। कभी अलमारी से, कभी टेबल से, कभी पलंग से। यदि व्यक्ति उस कमरे में लाइट ऑन कर लेता है, तो उसका टकराव बंद हो जाता है। सत्य साधना होश रूपी लाइट ऑन कर लेता है। सत्य साधना से व्यक्ति अन्धकारी-बनचारी हर अवस्था में लड़खड़ाता नहीं है, डगमगाता नहीं है। हर प्रण ही ऐसा प्रणी है जो दूसरों का भला कर सकता है। सैकड़ों-लाखों प्राणीयों का भला कर सकता है। तीर्थंकर मनुष्य के रूप में ही होते हैं वही उनके द्वारा तीनों लोकों के प्राणीयों का भला होता है। किसी देवी-देवता अथवा ईश्वर को मानने के प्राणीयों का भला करना होता है तो उन्हें भी मनुष्य बनना अनिवार्य होता है।

इस सभ्यता में सत्य साधना ध्यान में प्रवास दर्शन को किया। अब सत्य साधना ध्यान में सत्य दर्शन की दिशा में चलना है। सत्य दर्शन यात्रा स्वयंनिर्दिष्ट। भीतर की सच्चाइयों को जानना। ऐसे सच्चाइयों को जानना जिससे व्यक्ति बिलकुल बेखबर रहता है, अज्ञान रहता है।

आपको शिविर की शुरुआत में मुझे के स्थान पर ध्यान केंद्रित करने को कहा गया। जब आप काम मन दो क्षण, एक क्षण मुझे के स्थान पर टिकने लगा तो आपसे कहा गया कि मुझे के स्थान या सेन्सेशन हो रहे हैं, उनमें से सबसे कमजोर सेन्सेशन पर मन को केंद्रित करो। दरअसल आपको 'ए' के बाद 'बी', 'बी' के बाद 'सी' ऐसे सत्य साधना को मिलसिलेकारा मीठा जाता है।

सत्य साधना में अब तक प्रवास दर्शन की साधना की। अब सत्य दर्शन में शरीर की यात्रा करने का काम करना है। शरीर की यात्रा में हम अपने ही शरीर के विभिन्न भागों में मिलसिलेकार यात्रा करते हैं। शरीर में सेन्सेशन तो होते ही रहते हैं। शरीर पर जो भी अनुभव होता है, उसे ही सेन्सेशन कहते हैं। हमारे ही शरीर में कुछ सुखद सेन्सेशन भी हैं और कुछ दुःखद भी। चाहे दुःखद अनुभव हो रहे हैं, चाहे सुखद अनुभव हो रहे हैं, सभी सेन्सेशन हैं। ना दुःखद सेन्सेशन दूर करने की कोशिश करना है और न ही सुखद सेन्सेशन समेटने की कोशिश करना है। न ही दुःखद



उथल-पुथल को बदलें-सत्य साधना



सेन्सेशन दूर हैं। और न ही सुखद सेन्सेशन अच्छे हैं। न दुःखद सेन्सेशन क कावट बने अर्थात् उनसे ट्रेप दूधित नहीं बनें और न ही सुखद सेन्सेशन बहा कर ले जाये अर्थात् उनसे राग रजित नहीं बनें। दुःखद सेन्सेशन से ट्रेप नहीं करना है और सुखद से राग नहीं करना है। दुःख से भागना नहीं है। दुःख में जागना है। सुख को भीगना नहीं है। सुख में भी जागना है। सुखद सेन्सेशन में बहना नहीं है। दुःखद सेन्सेशन में अटकना नहीं है। हमें तो सभी सेन्सेशन को अनुभव करना है।

जब हम शरीर की यात्रा करते हैं तो कहीं हमें सुखद अनुभव मिलते हैं तो कहीं दुःखद। इन सुखद और दुःखद दोनों ही सेन्सेशन में एक बात समान है। एक बात कॉमन है और वो बात है कि सुखद सेन्सेशन भी जन्मते हैं-मरते हैं और दुःखद सेन्सेशन भी जन्मते हैं-मरते हैं। दोनों ही कभी बढ़ते हैं और कभी घटते हैं। निरंतर परिवर्तन दोनों के साथ चलता रहता है। दुःख भी बनता है, बिगड़ता है, जन्मता है मरता है। सुख भी बनता है, बिगड़ता है, जन्मता है मरता है। हमेशा सुख की धुन पर नुँ ही गाचने नहीं रहना, दुःख की धुन पर हताश निराश नहीं होना। ऐसे ही हमारे लिए तो सभी सेन्सेशन का बग़ाबर-बराबर रहना है।

शरीर की यात्रा करते हुए जो भी सेन्सेशन अनुभव हों, उन्हें अनुभव करना है और सेन्सेशन का बदलाव भी अनुभव हो तो उस बदलाव को भी अनुभव करना है। हर सेन्सेशन बदलाव को लिये हुए रहना है। कोई भी सेन्सेशन क्यों न हो? उसका स्वभाव बदलता रहता है। सेन्सेशन उपच होता है, फिट जाता है। जन्मता है, मरता है। घटता है,

खुशियाँ उगे न खेत में,
मिले न हाट बाजार।
अपने भीतर देख लो,
भरा है अतुल भंडार ॥

बढ़ता है। कहीं पर सेन्सेशन का दबाव ज्यादा होता है, कहीं पर उसका दबाव कम होता है। यह भी यदि अनुभव होता है तो इसे भी अनुभव करना है। हर सेन्सेशन में कुछ-न-कुछ बन रहा है, फिट रहा है, बिगड़ रहा है, उठ रहा है, जन्म रहा है, मर रहा है, घट रहा है, बढ़ रहा है, फैल रहा है, सिकुड़ रहा है, ऐसा कुछ भी अनुभव हो रहा है, तो उसे भी अनुभव कर रहे हैं।

साधना शरीर को स्थिर रखकर करे। जब-जब सामूहिक साधना करे, तो शरीर में हल-चल नहीं करे। शरीर को हिलाना-डुलाना बिलकुल भी नहीं करे। हिलाना-डुलाना बहुत जरूरी हो, तो कम-से-कम, कम-से-कम शरीर को हिलाना-डुलाना कर चला लें। कैमरा हिलाना-डुलाना है, तो कैमरा फोटो लेने का काम नहीं कर पाता है। जहाँ तक हो सके-शरीर स्थिर रहे।

एक शेर का उसका बच्चा भेड़ों के झुण्ड में चला गया। अब चला गया तो वह तो भेड़-बकरियों की तरह ही रहने लगा। भेड़े जिस तरह से घास खाती थी, वह शेर का बच्चा भी उसी तरह से घास खाने लग गया। भेड़े-बकरीयाँ जिस तरह चलती थी, वैसे ही वह भी चलने लग गया। अपना शेर-पना ही वह भूल गया। शेर अपने को भेड़ समझने लग गया। किसी दिन ऐसा हुआ कि कोई शेर पास से गुजरा और देखा कि यह क्या है? इन भेड़-बकरियों के बीच में यह शेर का बच्चा? यह भेड़-बकरी की तरह रह कैसे रहा है? बस, उस शेर ने लगाई हुंकार, उस शेर के बच्चे ने भी लगा दी हुंकार। शेर को हुंकार सुनकर सारी भेड़-बकरीयाँ भाग गईं। पर जो शेर का बच्चा वहीं खड़ा रहा। शेर ने एक बार और लगाई हुंकार तो शेर के बच्चे के भीतर स्थैर शेरपन जाग उठा। उसने अपना खोया हुआ सिंहल फिर से पा लिया। वह शेर का जीवन जीने लग गया।

मनुष्य अपना उद्देश्य बड़ा बनाए। मनुष्य ऐसा प्राणी है उसे उद्देश्य के अनुसार समर्थ-अर्थिक, सधन प्राप्त हो जाते हैं। मनुष्य अगर परम तत्व को पाने का उद्देश्य बना लें तो उसे सत्य साधना ध्यान रूपी साधन भी मिल जाता है। सत्य साधना ध्यान से मनुष्य परम तत्व को पा भी लेता है। यदि हम परमात्मा बनने का डान लें, संकल्प कर लें तो हम सरलाता से सत्य साधना भी करने लग जाते हैं और बड़े से बड़ा उद्देश्य प्राप्त कर लेते हैं।

एक शेर ने खरगोश को देखा और शेर खेचने लगा कि आज मैं इस खरगोश का नाशता करूँगा। यह सोचकर वह शेर खरगोश के पीछे भागा। लेकिन खरगोश को यह समझते देर न लगी कि शेर मुझे मारने आ रहा है। वह भी भागा और भागते-भागते खरगोश आगे-आगे भाग रहा था। और शेर उसके पीछे-पीछे भाग रहा था। भागते-भागते खरगोश एक बिल में चला गया। वह हारा हुआ शेर उस बिल के बाहर बैठ गया। और शेर

सोचने लगा कि मैं शेर, सबसे शक्तिशाली प्राणी और यह मामूली सा खरगोश आखिर, मैं इससे हार कैसे गया? उसने खरगोश को आश्वासन दिया कि तुम बहार आ जाओ। मैं तुम्हें बचाने देता हूँ कि मैं तुम्हें नहीं मारूँगा। खरगोश बाहर आया और शेर ने पूछा कि आखिर क्या कारण है कि मैं हार गया और तूम जीत गया। खरगोश बोला कि तुम्हारा उद्देश्य मात्र मुझे मारकर नाशता करना था और मेरा उद्देश्य बिलगत था मुझे अपने, बीबी-बच्चों को, परिवार को, संभालना था। तुम्हारा उद्देश्य मारने का था और मेरा उद्देश्य बचाने का था।

अक्सर मंदिरों के बाहर भिखारियों की कतार होती है और मंदिरों के अंदर भी भिखारियों की कतार होती है। बाहर छोटे भिखारियों की कतार होती है तो, अंदर बड़े भिखारियों की कतार होती है। हमें भिखारियों की कतार में शामिल नहीं होना है। हमें भिखारी बनने का उद्देश्य नहीं बनाना है। मंदिर में जो भगवान है उन जैसा बनने का उद्देश्य बनाना है।

एक राज्य में ऐसा नियम था कि- राजा केवल पांच साल के लिये ही बनाया जाता था। और पांच साल के बाद में उसे जंगल में छोड़ दिया जाता था। उसे जंगल में रहना पड़ता था। जंगल में रहने के लिए उसे पत्रबद्ध कर दिया जाता था। चंदे भाई राजा बना। लेकिन वह तो बिलकुल भी खूब नहीं हुआ। पिता ही चिंता उसको सताती रहती थी कि राजा तो बन गया, लेकिन पांच साल बाद? पांच साल बाद तो मुझे जंगल में जाना पड़ेगा। जंगली जानवर मुझे खा जायेंगे। मुझे कितनी-कितनी तकलीफों का सामना करना पड़ेगा। जंगली जानवर मुझे कितना-कितना परेशान करेंगे। पोपट भाई ने चंदेभाई को समझाया कि अरे, आप राजा हैं और पांच साल के लिए राजा हैं। तो पांच साल में सारे जंगल को इस तरह से बना दें कि-आपको पांच साल के बाद जंगल में जाना भी पड़े तो कोई तकलीफ नहीं हो। चंदे भाई बड़ा खुश हुआ। और उसने सारे जंगल को मंगल बना दिया। जंगल का जंगलीपन दूर कर दिया। हमें भी अपने मन के जंगलीपन को दूर करना है।

हम सबके भीतर भगवान का मंदिर है और उस मंदिर में न आरती हो रही थी, न पूजा हो रही थी, न कोई शंख ध्वनि बज रही थी, न झाड़ू-बूहारी लगाई जा रही थी, कुड़े-कारकट के बुरे लगे हुए थे, उस मंदिर में जो भगवान विजयजान थे उन्हें देखना तो बहुत दूर, उनकी एक झलक भी नहीं देख पा रहे थे। सत्य साधना करने से कूड़ा-कारकट हटने लगता है और प्रकाश की ओर बढ़ने लगते हैं।

हम तो अपने मन के लिए साधना कर रहे हैं। किसी पर एहसान करने के लिए साधना नहीं कर रहे हैं। अपना ही भला है। अपना ही कल्याण है। अपना ही शुभ है। इसलिए मैं साधना कर रहा हूँ। मैं साधना कर रही हूँ। एक-एक करके दिन तो निकलते जा रहे हैं। समझदार ही इसी में है-कि हर दिन खूब अच्छे से साधना करते रहें। समय अनमोल है। आप सारी धन दौलत भी दें तो गवा हुआ एक क्षण भी वापस नहीं ला सकते। जैसे-क्रेडिटर्स हारे को कौओं को उड़ाने के लिये नहीं फेंका जाता। समय तो कोहीनू हीरे से भी ज्यादा कीमती है। फेंका हुआ हीरा तो फिर से मिल सकता है। लेकिन समय को निकल गया वह नहीं मिल सकता है। हीरा तो फेंकने पर दूर होता है लेकिन समय तो बिना फेंके भी दूर हो जाता है। उसे सुस्ती में, आलस्य में, कोई बहाने बाजी में बिलकुल नहीं लगाए।



ऑनलाईन सत्य साधना बाल शिविर



* प्रति रविवार * प्रातः 9.00 से 10.00 बजे तक



ऑनलाईन सत्य साधना एक दिवसीय शिविर

* प्रति रविवार * समय : दोप. 12.05 से सायं 5.00 बजे तक

ऑनलाईन सत्य साधना सत्र

परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्रीपूज्य

श्री जिनचंद्रसूरीजी महाराज साहब

के सान्निध्य में सत्य साधना ध्यान का आयोजन

ऑनलाईन ऐप से किया जा रहा है।

इस ऑनलाईन सत्य साधना ध्यान में शामिल

होने के लिए आप सभी सादर आमंत्रित हैं।



सत्य साधना सत्र में शामिल होने के लिए आपको निम्न बातों का ध्यान रखना होगा -

<https://www.gotomeet.me/SatyaSadhna> इस लिंक से ऐप को इंस्टॉल करें।

सत्य साधना ध्यान शुरू होने के 5 मिनट पहले आप अपना लेपटॉप, डेस्कटॉप या स्मार्टफोन ऑन कर लें।

कैमरे और स्पीकर को चालू रखें। लेपटॉप, डेस्कटॉप या स्मार्टफोन के माइक्रोफोन को बन्द रखें।

इन्कमिंग कॉल Do Not Disturb के मोड पर रखें।

आराम से बैठें। आँखें बंद रहे और कमर सीधी रखें। निर्देशों का पालन करें। निर्देशों के अन्तराल में भी साधना

1. अकेले बैठे या परिवार के साथ बैठे हैं तो प्रत्येक के बीच 1 मीटर का डिस्टेंस होना अनिवार्य है।
2. अगर संभव हो सके तो आराम से जमीन पर कुशन का उपयोग कर सुखासन में बैठें अन्यथा कुर्सी का उपयोग करें।
3. जिस कमरे में आप साधना कर रहे हैं वहाँ मौन रहे।
4. आपकी कमर गर्दन सीधी रखें और आँखें बंद रहें।
5. जो इंस्टक्शन सुन रहे हैं, उनका पालन करें।

सत्य साधना

प्रतिदिन

प्रातः 5.30 से 6.30

प्रातः 8.00 से 9.00

दोप. 2.30 से 3.30

सायं 6.00 से 7.00

स्थान- आपका निवास



ऑनलाईन साधनामय महापर्व पर्युषण



साधनामय महापर्व पर्युषण का ऑनलाईन आयोजन जंगम युग प्रधान वृहद् भट्टारक खरतरगच्छाधिपति 1008 श्रीपूज्य श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज साहब के परम पावन सान्निध्य में कुशलायतन नाल द्वारा किया गया। महापर्व पर्युषण की आराधना का लाभ देश-विदेश में रहने वाले सभी साधर्मिक बंधुओं ने अपने निज निवास स्थान पर रहकर प्राप्त किया। पर्युषण की आराधना में प्रतिदिन सत्य साधना, प्रवचन, मंदिर दर्शन, स्नात्र पूजन महोत्सव, प्रतिक्रमण एवं विभिन्न प्रकार के विडियों द्वारा अठारह पाप स्थानक, बाह्य तप, आभयन्तर तप, यति एवं साधुओं का परिचय और भी अन्य बहुत सी धार्मिक चर्चाओं के द्वारा महापर्व का महत्त्व समझाया गया।

भाद्रवा वदी चौदस के दिन जंगम युग प्रधान वृहद् भट्टारक खरतरगच्छाधिपति 1008 दादागुरुदेव श्रीपूज्य मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज साहब के स्वर्गारोहण दिवस के उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा एवं दादागुरुदेव इकतीसे का आयोजन कर दादागुरुदेव के जीवन चरित्र को बतलाया गया।

महापर्व पर्युषण के पंचम दिवस श्रमण भगवान महावीर स्वामी का जन्म वांचन कर जन्म महोत्सव सभी भक्तजनों द्वारा अपने निवास स्थान पर रहकर ऑनलाईन मनाया गया।

संवत्सरी महापर्व दिवस पर परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्रीपूज्यजी श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज साहब द्वारा बारसा सूत्र का वांचन करते हुए महापर्व पर्युषण एवं संवत्सरी महापर्व की महत्ता को बड़ी सरलता से बताया गया। संध्या 4 बजे से श्रीपूज्यजी महाराज साहब द्वारा संवत्सरी प्रतिक्रमण की विशिष्टता को बतलाते हुए प्रतिक्रमण के ऑनलाईन आयोजन का लाभ सभी श्रद्धालु ने अपने घर पर रहकर प्राप्त किया और क्षमायाचना के महत्त्व को भी बताया गया।

ऑनलाईन महापर्व पर्युषण की आराधना का भक्तिमय संपूर्ण आयोजन बड़ा उपासरा खरतरगच्छ श्रीसंघ के द्वारा किया गया।

